: द्वितीय अध्याय :

: अंधा कुआँ की वस्तु, पात्र तथा शीर्षक :

डा॰ लक्ष्मीनारायण शिवसेवक लाल द्वारा लिखित अंधा कुआँ सर्व प्रथम नाटक है। इसके प्रथम संस्करणका प्रकाशन १९५५ इ॰में॰भारती भांडार, प्रयागसे प्रकाशित हुआ। तब इस नाटककी अवधी ढाई घंटोंकी थी और उसमें रामदीन, जोखन, अधारे, परभूका अंश नहीं था। दूसरे संस्करणमें (पुर्नसंशोधित) ये अंश जोडनेपर इसकी अभिनय अवधि तीन घंटोंकी हो गई। प्रस्तुत नाटक चार अंकोंमें विभाजित है। इसमें प्रवेश नहीं है। लेकिन "फेड आऊट, फेड इन " तंत्रके आधारपर समय" अंतराल दिखाई गया है।

नाटक का समर्पण " जलालपूर की सूका को समर्पित जो अबतक जीवित है " इस बातका आभास देता है कि नाटककी घटनाएं एवं पात्र यथार्थ जीवनसे लिए गये हैं।

कथावस्तु :--- अंधा कुआँ नाटक की कथावस्तु संबंधी डा॰सरजू प्रसाद मिश्र के विचार दृष्टव्य है --- " नाटक का परिवेश ,पात्र एवं समस्या सभी ग्रामीण जीवनसे संबंधित है। " [१]

इस कथनका परीक्षण अंधा कुआँ नाटकके आधारपर करें तो ये तथ्य सामने आते हैं कि इस नाटकका परिवेश, पात्र--- पुरुष एवं स्त्री पात्र --तो ग्रामीण जीवनसे संबंधित जरुर हैं। लेकिन अंधा कुआँ नाटककी समस्या --- कथावस्तुको ग्रामीण जीवनसे संबंधित और ग्रामीण जीवनकी कह नहीं सकते क्योंकि अंधा कुआँ की समस्या कमालपुर गाँवके मध्यमवर्गीय किसान भगौती और उसकी पत्नी सूका के दांपत्य जीवनकी अर्थात उन दोनोंकी वैयक्तिक समस्यासे संबंधित हैं और पृष्ठभूमिमें ग्रामीण वातावरण नाटककारने चित्रित किया है।

---

(१) नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल ---डा॰ सरजू प्रसाद मिश्र--पृ॰५२॰

समस्या ---- आलोच्य नाटकी कथावस्तुका बीज अत्यंत छोटा है और वह यह है कि भागोतीके अपनी पत्नि -सूकाके प्रति नैतिक मूल्यसंबंधी एकांगी विचार और तदनंतर भागोतीकी प्रतिक्रिया ही संपूर्ण नाटकका कथासूत्र बन गया है । यह कथा पारिवारिक जीवनसे संबंधित है । याने बिलकुल की वैयक्तिक है ।

जैसा कि मिश्रजीने कहा है उस अर्थमें इस नाटककी समस्या कमालपुर की प्रातिनिधिक नहीं है , क्योंकि यह घटना हर परिवारके साथ संभव नहीं है ।

इसलिए मुझे मिश्रजीका उपर्युक्त कथन इस अर्थमें उचित नहीं लगता । संक्षेपमें संपूर्ण नाटक भागोती और सूकाके वैयक्तिक समस्यासे संबंधित है ।

इस संदर्भमें नर नारायण रायने लिखा है-----------

" कमालपुर गाँवके एक किसान परिवारमें घटनेवाली घटनाओंको आधार बनाकर नाटककारने भारतीय ग्रामीण जीवनकी आंतरिक विसंगतियोंको उजागर करनेकी कोशिश की है । " १.

नर नारायण राय का यह कथन नाटककी कथावस्तुको देखते हुए अधिक उचित लगता है ।

वैसे देखा जाय तो डॉ. लालने नर नारी विषयक समस्यासे संबंधित अनेक नाटक लिखे है । उदा. (१) मादा कैक्टस। (२) नाटक तोता मैना। (३) रातरानी। (४) करफ्यू। (५) सूर्यमुख। (६) व्यक्तिगत। (७) गंगामाटी। (८) सगुनपंछी। सभीमें यह संघर्ष है । लेकिन कथावस्तुकी दृष्टिसे, समस्याकी दृष्टिसे अंधाकुआं का स्थान अन्य नाटयकृतियोंसे अलग ही है ।

नाटक की कथावस्तुका प्रमुख केंद्र, घटना स्थल भागोतीका घर है । नाटककारने इस प्रकारकी सूचना नाटकके प्रारंभमें दे दी है —

---

(१) नाटककार लक्ष्मीनारायण लालकी नाटयसाधना---नर नारायण राय- --पृ.२९

दृश्य :--

पहला अंक, दरवाजेका बरामदा ।
दूसरा अंक, भीतरका दुइदरा ।
तीसरा अंक, दुइदरेका आँगन ।
चौथा अंक, भीतरका दुइदरा ।

कथावस्तु ------ प्रथम अंक :-- लक्ष्मी नारायण लालकी प्रथम नाटयकृति ---- अंधा कुआँकी कथावस्तु का संबंध कमालपुर ग्रामके एक परिवारके भगौती और सूका पति पत्नीसे है । लालने इस नाटकमें एक परिवार सीमित किया है । इस नाटकमें पाँच पात्र है भगौती और सूका , अलगू और राजी और नंदो ।

कमालपुरके भगौतीने जलालपुर की सुकाको खरीदकर पत्नी बनाया है । भगौतीकी सौभाग्यवती सूका अपने पतिके संबंधमें कहती है------

" जब मैं खादीदकर इस घरमें आयी थी दूलहन बनकर, तब यह रोज नहीं, दूसरे तीसरे ही मारता था, और बाहर भीतर आते-जाते मुझपर छिपी नजर रखता था ।" १

परिणाम स्वरूप सूका अपने विवाहपूर्व प्रेमी इंदरके साथ कलकत्ता भाग जाती है ।

तब उसका पति वारंट कटाता है । जिसके कारण इंदर और सूका दोनों प्रेमी पकडे जाते हैं और सूका फिर भगौतीके पास जबरन लाई गयी उस वक्त इजलासमें झूठे वादे किए गये । भगौतीने भी सूकाको अच्छी तरहसे रखनेका वादा किया । लेकिन अब राक्षस बनकर सूका की चमडी उधेडता है । इसका कारण खुद उसके शब्दोंमें ---" खान्दान की बदनामी, मेरी बेइज्जती जो उसने की है मेरा कलेजा जो उसने झाँझर किया है ।" २

---

(१) अंधा कुआँ ---लक्ष्मीनारायण लाल, पृष्ठ-६८
(२) ---वही------- -----"------- पृष्ठ-५०

लेकिन खानदान की बदनामीकी अपेक्षा उसे अपनी बेइज्जती अधिक लगती है । जिसके कारण वह सूकाके साथ पशुवत अत्याचार करता है । अपनी बेईज्जतीका बदला वह कसाईकी तरह, हत्यारे की तरह सूकाको मार मारकर लेता है ।

आदमीको जरा खुरचिए तो पशु दिखाई पड जाएगा

इस आशयकी अंग्रेजीमें कहावत है ।

आदमीकी यह खुरचन भागोतीके रुपमें हमें देखने मिलती है ।

इतनाही नहीं भागोतीके तेजई, हरखू और मूरत नामक दोस्तोंने उसे गांजाकी आदत डलवायी है । इस आदतके कारण भागोती बिलकुल काम नहीं करता ।

इस परिवारमें भागोती और अलगू की नंदो नामक छोटी बहन है । लोकसाहित्यमें जिस तरह बहनका परंपरागत रुप देखने मिलता है ठीक वैसाही यहांकी नंदोका स्वभाव है ।

सूकाके संबंधमें आगमें घी डालनेका काम करती है । खुद अनाज बेच बेचकर पैसे गाडती है । लेकिन अपने पेटका पाप सूकाके सरपर मढ देती है ।

नाटकका दूसरा पुरुष पात्र - भागोतीका छोटा भाई-- अलगू है, जो परिश्रमी है । अपनी खेतीकी चिंतामें डूबा रहता है । अलगू और राजी पति -पत्नी है । जिन्हें सूकासे हमदर्दी है, लेकिन भागोतीके आगे उनकी एक भी नहीं चलती । अलगूने कुछ कहा तो घरसे अलग जानेकी भागोती धमकी दे देता है ।

तब सूका कहती है ---" मुझे अकेली न छोडना इस घरमें मुझे यह मार डालेगा, जिंदा गाड देगा धरतीमें " तब भागोती अपनी लाठीसे सूकापर प्रहार करता है । इस प्रकार प्रथम अंक मारपीटसे शुरु हो जाता है और मारपीटसेही समाप्त हो जाता है ।

द्वितीय अंक ---- पहले अंककी तरह यह अंक भी भय और आंतकसे मुक्त नहीं है । सावन मास और नागपंचमीकी रातका पहला पहर है अलगू और राजी चिंतित है क्योंकि सूका घरसे गायब है । कुछ ही देरमें भागौती गाँववालोंके साथ सूका को पकडकर लाता है ।

सूका अपने पति भागौतीके हररोजके अत्याचारसे पीडित होनेके कारण डूब मरने गई थी। जिस कुएँमें जान देनेके लिए गई थी, वह सूखा था इसलिए वह बच निकलती है । अब भागौती उसे पावेसे बाँध देता है और लोहेकी गर्म सलाखसे दागना चाहता है । हमेशाकी तरह अलगू हस्तक्षेप करके उसके अमानुषिक प्रयत्नको निष्फल कर देता है ।

सावन महिनेकी रात होनेके कारण बारिश मेघगर्जना तथा बिजलीकी कौंध हो रही है । सूका पावेसे बाँध दी गई है । इतनेमें सूकाका विवाह पूर्व प्रेमी इंदर आँगनमें कूदता है । इस बार फिर वह सूका को भगाकर ले जाना चाहता है । लेकिन अब सूका उसके साथ जानेके लिए तैयार नहीं है अब वह इंदरसे घृणा करती है । इसका कारण सूकाने दे दिया है,"..... पुलिस मुझे गिरफतार कर रही थी और तू दुर एक गलीमें खडा-खडा मेरा मुँह तक रहा था, तब मुझे देखकर तेरी तबीयत नहीं भरी थी क्या ? बोल भरे इजलास में झूठ बोलकर राम-रामायण की कसम खाकर जब कमालपुरवाले मुझे हरा रहे थे, तब भी तू खडा-खडा इसी तरह मेरा मुँह तक रहा था । " १.

सूकाकी दृष्टिमें इंदरने मर्दका व्यवहार नहीं किया । इसलिए इंदर सूकाको उसके साथ चलनेके लिए कहता है। तो सूकाकी घृणा निम्न शब्दोमें फूट पडती है ," .... किसी भी हालतमें नही, न तेरी दया, न तेरा गाँव, न कलकत्ता, न बंबई, न सुख, न भोग, कुछ नहीं, चला जा यहाँसे, निकल जा मेरे घरसे । " २

---

(१) अंधा कुआँ --- लक्ष्मीनारायण लाल --- पृ•७७
(१) ------वहीं --- ------""------ ----पृ•७९

तब इंदर जबरन सूकाका बंधान खोलकर उसे ले जाना चाहता है। तब सूका, " चोर, चोर " चिल्ला उठती है। इतनेमें भागौती आकर इंदरका पीछा करता है और घायल होकर लौटता दिखाई देता है।

इस अंककी पृष्ठभूमिमें चलनेवाला झूला, झूलनेवाली स्त्रियोंका लोकगीत "कजली" सूकाकी परतंत्रता, असहायता एवं बेबसी की वेदना स्पष्ट करनेवाला है —

" उडि जा तू कागा, सैयाँ के देसवा
कजरी के बनवाँ , अरे फूलन लागे। "१

यहाँ लोकगीत की झाँकी देखने मिलती है।

तीसरा अंक चक्कीके गीतसे प्रारंभ होता है -------

" हमरे बबैया जू के सात बेटौना रे ना,
रामा सातौ के चंदा बहिनियाँ रे ना
सातौ भाईयवे चले परदेशवा रे ना,। "२

इस प्रकार चक्की चलानेवाली स्त्री गाना गाती है। इस लोकगीतमें वर्णन है कि पति अपनी पत्नीपर संदेह की दृष्टिसे देखता है। ठीक उसी प्रकार जैसे सूकाका पति भागौती भी सूका की ओर संदेह भरी नजरसे देखता है।

आगे चलकर सूका और चक्की चलानेवाली स्त्रीमें सूकाके संतान संबंधी जिक्र चलता है। तब सूका बताती है कि संतान प्राप्तिके लिए भागौती बंदरकी खोपडी ले आता है। लेकिन संतान प्राप्तिमें सफलता न मिलनेपर सूकाको बाँझ समझकर उसकी छातीपर चक्की चलानेकेलिए लच्छी के रूपमें सौत भी लाता है। लच्छीका विवाह माधोपूरवाले हीरासे होनेवाला था लेकिन माता पिता विहीन बालिकाको काकाने भागौतीके हाथों बेच दिया फिर एक बार इतिहासकी पुनरावृत्ति हो गई। लेकिन सूका नहीं चाहती कि

---

(१) अंधाकुआँ -----लक्ष्मीनारायण लाल --- पृष्ठ---६५
(2) वही " पृष्ठ 83

लच्छीकी नियति उसके समान हो इसलिए वह योजना बनाकर लच्छी और उसके= हीराके भागनेमें मदद करती है। भागौती धातूरेके बीज मिली भांग पीकर सोता रहता है और सूका लच्छीको अपनी मुँहबोली बेटीकी तरह विदा करती है।

चौथा अंक :-- चौथे अंकके प्रारंभमें लच्छिके भागनेके संबंधमें औरतोंमें चर्चा हो रही है। इस चर्चाव्दारा पता चलता है कि मुडेरा के बाजारके--में और लच्छीके संबंधमें भागौतीव्दारा इंदरपर संशय लेनेपर इंदर और भागौतीमें हाथापाई हो गई। जिसमें भागौतीके पैरकी हड्डी टूट जाती है और भागौती अपंग बनकर खाटपर पडता है और भागौती सूकाकी दयापर जीनेके लिए मजबूर होता है।फिर भी सूकाको डाँटने, फटकारने या मारनेकी क्रिया अबाध रूपसे जारी है। मनमें गहरी कटुता और घृणाके बावजूद सूका भागौतीकी सेवा करती है। लेकिन चौथे अंकके अंतमें इंदर भागौतीको जानसे मार डालेनेके लिए आता है। तब सूका स्वयं गंडासा तानकर भागौतीकी रक्षा करती है और इंदरके तलवारका वार अपने ऊपर लेती है। जिसमें उसका अंत हो जाता है।

इस तरह अंधाकुआँ शोकांत नाटक है।

अंधाकुआँके पात्र :---- लक्ष्मी नारायण लालने पात्र इस प्रकार लिए हैं। (१) भागौती।(२) सूका। (३) मलगू।(४) राजी। (५) इंदर। (६) नंदो। (७) लच्छी। (८) मिनकू काका। (९) हरखू। मौसिया। (१०) तेजई। (११) मूरत। (१२) हीरा। (१३) रामदीन। (१४) जोखन। (१५) भतारे। (१६) परभू। तथा तीन औरतें। ये अंधाकुआँके मुख्य और गौण पात्र हैं। लेकिन प्रमुख पुरुष पात्र हैं---- भागौती, मलगू और स्त्री पात्रोमें---- सूका, राजी और नंदो हैं। इस प्रकार परिवारके सभी पात्र प्रमुख हैं तो लोककी दृष्टिमें अन्य गौण पात्रोंके अंतर्गत मिनकू काका, हरखू मौसिया ,तेजई, मूरत, हीरा, रामदीन, जोखन

अधारे, परभू तथा तीन औरतें मंचपर अवतरित होती है।

भागौती --- शाोकांत नाटक अंधाकुआँमें प्रमुख पुरुष पात्रोंमें भागौतीका स्थान महत्वपूर्ण है। वह इस नाटकका खलनायक भी है। जलालपूरकी खरीदी गई सूकासे उसकी शादी हो गई है। नैतिक मूल्यके प्रति उसकी धारणा बडी ही अलग है। पत्नीकी एकनिष्ठताके संबंधमें उसके एकांगी विचार है। इसलिए अपनी पत्नी-सूकाकी मारपीट करता रहता है। भागौतीके संबंधमें नर नारायण रायने कहा है, "शुरुमें भागौती ऐसा नहीं था --- बडी ललकसे सुकियाको उसने गुपचुप खरीदा और ब्याहा था। सूकाको बिका हुआ जीवन स्वीकार्य नहीं था। वही बगल के टोलेके ईंदर के साथ कलकत्ता भाग गयी।" [१]

लेकिन नर नारायण राय का यह कथन पक्षपात-पूर्ण कहना होगा। सूकापर अन्याय करनेवाला कथन है। क्योंकि सूकाने खुद अंधाकुआँके व्दितीय अंकमें कहा है, "जब मैं खरीदकर इस घरमें आयी थी दूल्हन बनकर, तब यह रोज नहीं, दूसरे तीसरे ही मारता था, और बाहर-भीतर आते जाते मुझपर छिपी नजर रखता था।" [२]

अत: सूका भाग ई। इसकी जिम्मेदारी भागौतीपर ही है। क्योंकि उसका स्वभाव ही कुछ उच्छृंखल, संदेही, बर्बर, पाशवी वृत्तिका है। ~~ईके केवल सूकाके~~ ऐसी बात नहीं कि केवल सूकाके साथ ही उसका ऐसा स्वभाव है। वरन् उसकी भावज राजी, भाई अलगू और व्दितीय पत्नी लच्छी के साथ भी उसका दुर्व्यवहार है। तृतीय अंकमें लच्छीसे क्रोधभरे शब्दोंमें सुनानेमें नहीं हिचकिचाता कि " है लच्छीकी दुम, खरीदकर लाया हूँ। काटकर फैंक दूँगा।" [३]

---

(१) अंधा कुआँ --लक्ष्मीनारायण लाल -- पृष्ठ ३०.
(२) -----"----- -----"----- -- पृष्ठ ३८.
(३) -----"----- -----"----- --पृष्ठ-९२.

इतनाही नहीं औरत के बारेमें उसके विचारोंसे पता चलता है कि भागौतीका स्वभाव पशुवत ही है। हरखूको उददेश्यकर व्दितीय अंकमें वह कहता है, " हमारे बाबा एक बात कहा करते थे मौसिया, कि औरत और भेड को दो चीजें नहीं होती, न दिमाग न रीढ की हड्डी, बस इनके एक चीज होती है गरदन जिस किसीने इनकी गरदन नाप ली बस ये उन्हीं की हुई हैं। "१

केवल स्त्रीके बारेमें ही उसका ऐसा पूर्वग्रहयुक्त दृष्टिकोण है, ऐसी बात नहीं वरन् उसके मनमें ईश्वरके लिए भी स्थान नहीं और मिनकू काका जैसे बडे लोगोंके लिए भी आदर नहीं है। इसकी ना अपने छोटे भाई अलगू से पटती है ना भावज राजीसे, इसेके किसीकी भी पर्वा नहीं है।

संपूर्ण नाटकमें यह एक ऐसा व्यक्ति है। जिसमें सारे दुर्गुण आकर बस गये हैं। नर नारायण रायने इसका वर्णन उचितही किया है कि भागौती में मनुष्योचित विवेक नहीं है। वह क्रोध, ईर्ष्या, व्देष अहंकारसे परिपूर्ण है।

इस प्रकार नाटकके अन्य पात्रोंसे किए वार्तालापसे भी हम इसके स्वभावके बारेमें जान सकते हैं। भागौती का स्वभाव चित्रित करनेवाली कुछ झलके --------

(१) भागौती मिनकू काकासे कहता है --------- मुझे जो जो सूझेगा मैं वही करूँगा। मुझे किसीका डर नहीं। (पृ.८)

(२) भागौती प्रथम पत्नी ---सूकासे कहता है----चुडैल, यहाँ क्यों आई ? .....इसे देखते ही मुझपर छिपकली चढ जाती है। (पृ.८)

(३) भागौती छोटे भाई अलगूसे कहता है---(व्यंगसे) यह घर मेरा है। मैं इस घरका मालिक हूं, तुमसे मतलब ? मैं चाहे जो करूं। (पृ.४४)

(४) भागौती भावज राजीसे कहता है--- देख राजी ! कान पार के सुन, समझ बूझकर घर गृहस्थीमें पैर रखा करना, नहीं तो गेहूं के साथ घुन भी पिस उठता है, मालूम है कि नहीं (पृ.६३)

(५) भागौती मिनकू काकासे इंदरसे बारेमें कहता है---------

ऐसी मूक मारे कि वह अंधा होकर छटपटाता हुआ मेरे पास आकर गिर पडे। (पृ.१४७०)

इंदरवा जब मेरे सामने अंधा ओकर छटपटाकर गिरेगा, फिर मैं अपनी कटारसे उसका कलेजा निकालूँगा। (पृ१४७०)

इस तरह बात बातमें चुडैल, डायन बेशरम आदि गालियाँ देनेवालीं, हरखू, तेजई तथा मूरतकी बातें माननेवाला, अपनी बहन नैंदो की हरबातपर विश्वास करनेवाला, अपने भाई, भावजसे हरवक्त टकरानेवालो पर साहूकारोंके सामने चुप रहनेवाला, विदेश्ता चमार व्दारा इंदरवा के घरमें आग लगानेवाला तथा हर बातके लिए सूकाको जिम्मेदार माननेवाला सूकाके लिए सौत लानेवाला, अपंग बननेपर सूकाकी सेवाके बावजूद गालियाँ देनेवाले भागौती का अंधाकुआँमें चित्रण नाटककारने यथार्थतासे किया है।

इस नाटक का भागौती खलनायक है। इसलिए इस नाटककी कथावस्तु, घटनाएँ भागौतीके इर्दगिर्द घूमती हुई दिखाई देती है और अंतमें चरम स्थिति पर पहुँचती हैं।

सूका-----:

अंधा कुआँ दुखांत नाटक की नायिकासे रूपमें प्रमुख स्त्री पात्र है। यह एक ऐसी स्त्री है, जिसे बिका हुआ जीवन स्वीकार्य नहीं है। फिर भी भागौतीने उसे चुपचाप खरीदा और ब्याहा। पतिकी संदेह भरी नजरोंके कारण और मारपीटके कारण वह अपने विवाहपूर्व प्रेमी इंदरके साथ कमालपुरसे कलकत्ता भागी जाती है।

अपने प्रेमी के साथ भागनेका कारण वह भी हो सकता है -- जैसा की खुद सूकाने दूसरे अंकमें कहा है--- ब्याहकर जब मैं इस घरमें लायी गई, तब इस घरने मुझे रखैल कहा। "

हो सकता है उसे यह कह लेना नापसंद हो इसलिए वह भाग जाती है। लेकिन इस प्रसंगसे उसके करुण जीवनकी शुरुवात होती है। उसका पति भागौती वारंट कटाकर उसे प्राप्त करनेमें सफल हो जाता है। उसे प्राप्त करनेके लिए राम-रामायणकी झूठी कसमें खाई गयी। लेकिन अब उसके दिन और रातकी शुरुवात मारपीटसे होती है।

इस तरह सूका अपने पति भागौतीके निर्मम अत्याचारोंसे त्रस्त और दमित है। केवल शारीरिकही नहीं मानसिक अत्याचार भी वह उसके साथ करता है। इतना होनेपर भी सूका के स्वभावकी विशेषताएं हमें दिखाई देती है।

मानवीय चरित्रके रूपमें लालने इसका चित्रण किया है। सूकामें यथार्थ और आदर्श दोनों गुणोंका मिश्रण देखनेको मिलता है।

परिवारके सभी सदस्योंसे उसके स्नेहपूर्ण संबंध हैं। जिस ननदने उसे जखमपर लगानेके लिए हल्दी प्याजके लिए भी मुहताज किया था। उसके साथ भी वह अच्छाही व्यवहार करती है जो पहले तीन तेरह करती थी। नंदोकी सुसुरालवालोंसे नहीं पटती, तब सूका नंदोके साथ मानवीय व्यवहार करती है। सूकाकी देवरानी-- राजीके मनमें सूकाके लिए स्नेह ही है। देवर-अलगु तो हमेशा भागौतीव्दारा मारपीटसे उसकी रक्षा करता है। इसलिए राजी और अलगूका तो सूकाको बडा सहारा है। इतनाही नहीं सूकाको बाँझ समझकर सौतके रूपमें जिस लच्छीको भागौती लाता है। उस लच्छीके साथ उसका संबंध माँ बेटी का तरह है। इस तरह सूकाको लच्छीसे वास्तविक प्रेम है। परंपरागत"सौतिया डाह" बिलकुल नहीं है। सूका नहीं चाहती कि खुदकी तरह लच्छीका भाग्य भी अभागा हो। इसलिए लच्छीको उसके मँगेतर माधोपुरवाले हीरा के साथ भाग जानेमें मदद करती है।

जो पति पहले उसकी खाल उधेड रहा था। वही जब अपंग बन जाता है, तो वह उसकी सेवा करती है। वह अच्छा हो इसलिए सत--नारायण बाबाकी कथा सुनाती है और इंदर के तलवारका घाव अपने -पर लेकर प्राण त्याग करती है। इतनाही नहीं जिस इंदरके साथ वह भाग गई थी। उसी इंदरके साथ भागनेसे इन्कार करती है और उसे खरी खोटी भी सुनाती है---- सूका -"वह मेरा पति है, मुझे मार डालेगा तो क्या, मुझे मंजूर है, वह उसकी मार, उसकी यातना और कमालपुरके कुएँ, नदी, नाले, सब। लेकिन किसी भी हालतमें तू नहीं, न तेरी दया, न तेरा गाँव, न कलकत्ता, न बंबई, न सुख, न भोग, कुछ नहीं, चला जा यहाँसे, निकल जा मेरे द्वारसे। " [१]

इस तरह कहकर भगा तो देती है लेकिन चतुर्थ अंकमें इंदर दुबारा आनेपर और अपंग भागोतीपर जब वार करने लगता है तब कहती है ----

सूका---"मेरे जिंदा रहते तू उसे नहीं मार सकता, मैं तेरा खून पी लूंगी। नहीं, नहीं.......... नहीं यह नहीं हो सकता। मेरे जीते जी यह नहीं हो सकता। " [2]

डा. लालने सूकाके चरित्र निर्माणमें काफी सफलता प्राप्त की है। लेकिन कहीं कहीं ऐसा लगता है कि सूकाकी जुबानसे नाटककार ही बोल रहा है।

अंधाकुआं में इस तरह के दो स्थान है। उदा. दूसरे अंकमें पति भागोतीव्दारा सूका पावसे बांधा दी जाती है, तब सूकाका देवर अलगू उसे बंधनमुक्त करना चाहता है तो उसे रोकती हुई सूका कहती है ----

" इन रस्सियोंको तैयार करनेवाले और इनसे गाँठ बनानेवाले जब तक वे हाथ मौजूद है, तबतक केवल इन रस्सियोंको काटनेसे कुछ नहीं होगा, बाबू। " [3]

---

(१) अंधा कुआं --- लक्ष्मीनारायण लाल---- पृष्ठ ७९.
(2) -----"----- ----"-------- ----पृष्ठ १५६.
(3) -----"------ ----"-------- ---- पृष्ठ ६८.

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

उसी अंकमें अलगू की पत्नि और सूका की देवरानी को उद्देश्यकर सूका कहती है --------

"ब्याहकर जब मैं इस घरमें लायी गयी, तब इस घरने मुझे रखैल कहा, कचहरी से लौटकर जब मैं इस घरमें आयी, तब इस घरने मुझे भागैल कहा और आज जब इस घरमें बाँधकर लायी गयी तबसे यह काला घर मुझे चुडैल कह रहा है। "[1]

इस प्रकार साफ सुथरे, पढे लिखे व्यक्तियोंकी तरह सूका की बातें जब हम देखते हैं, सुनते हैं तो इसके पीछे नाटककारका हाथ दिखाई देता है। इस प्रकारके कुछ नाम मात्र दोष होनेपर भी सूकाके चरित्र निर्माणमें आदर्श और यथार्थ के ताने बाने मिलते हैं।

जिस तरह भागौती के दुर्व्यवहार के उदाहरण हमने देखे।। ठीक उसी तरह सूकाके मानवतापूर्ण स्वभावके बारेमें कुछ उदा॰ प्रस्तुत हैं----

(१) मिनकू काका सूकाके संबंधमें भागौतीसे कहते हैं-----

" भागौती !। सुनो, जिस तरहसे भीतर तुम्हारी मारसे इस समय सूका रो रही है, डायन-प्रेतिन होती तो वह इस तरह रोती नहीं, दिन दहाडे वह घरमें आग लगाकर कहीं गायब हो गयी होती। "(पृ.५)

(२) राजी सूकाके संबंधमें अपने पतिसे कहती है --------

" नंदोने आज फिर आग लगायी है। खुद तो अनाज बेचबेचकर पैसा गाँठती है और झूठ-मूठ आज उसने सूका दीदी को धर पकडवाया। खुद कपडेमें धान बाँधकर खिडकीके रास्ते उसे निकाल रही थी, लेकिन निकाल न सकी, फिर उल्टे अपने पेटका पाप सूका दीदी के सिर मढ दिया। "(पृ.१६)

(३) चौथे अंकमें पहली औरत सूकाका बडप्पन बताती है -----

" सूका दीदीने बुलवा मंगवाया है, नहीं तो जितना नंदो ने उसके साथ

---

(१) अंधा कुआँ -----लक्ष्मीनारायण लाल --- पृ॰ ७०॰

किया है दूसरी भावज होती तो जनमभर नंदो को कमालपुरका मुँह न देखानेको बदा होता । "(पृ१२९)

(४) दूसरी औरत सूका की श्रेष्ठता का वर्णन करती है --------

" सूका दीदी का ही दिल है कि वह इतने पर भी आज भागोती को डूबनेसे बचा रही है । "(पृ १३३)

अन्य पात्रोंके वक्तव्यसे सूकाके चरित्रपर प्रकाश डाला गया है।

शीर्षक :---

किसी भी साहित्य कृतिके शीर्षका स्थान बडा ही महत्त्वपूर्ण होता है । अंधाकुआ नाटकका शीर्षक वैसे कोई नया नहीं कहा जा सकता क्योंकि भारतेंदुने ई.१८८१ इस्वीमें "अंधेर नगरी" नामक नाटक लिखा था। और धर्मवीर भारतीने ई.१९५४ इस्वीमें "अंधायुग" नामक गीतिनाटय लिखा था। लक्ष्मीनारायण लालने ई.१९५५ में "अंधाकुआ" नामक नाटक लिखा ।

उपर्युक्त तीनोंही कृतियोंमें "अंधा" यह विशेषण भालेही प्रयुक्त हुआ है। लेकिन यह विशेषण तीनों कृतियोंमें भिन्न - भिन्न अर्थमें आया है।

'अंधेर नगरी"में भारतेंदुने इसे शासकके संदर्भमें प्रयुक्त किया है।

"अंधायुग" में धर्मवीर भारतीने कौरवोंके पक्षको लेकर कहा है। और "अंधाकुआमें" लक्ष्मी नारायण लालने उसे व्यक्तिके संदर्भ में प्रयुक्त किया है।

फिर भी तीनोंमें पाशवीकता, अत्याचार, विवेकहीनता, दायित्वहीनता, बर्बरता, आदिमें साम्य ही है।

"अंधा कुआँ" शीर्षक का एक अलग ही महत्त्व इसलिए है कि आजके युगमें व्यक्तिके व्यक्तित्वको प्रधानता दी जाती है। यहाँके भगौतीके मनकी अतल गहराइयाँ नाटककारको अपेक्षित है। इसलिए यह शीर्षक प्रतीकात्मक है।

शीर्षकके संदर्भमें दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि ग्रामीण जीवनमें, लोक जीवनमें कुएँका स्थान तो सर्वश्रेष्ठ होता है। अंधे कुएँमें गिरनेवाला व्यक्ति जीवित निकलना असंभव है। भलेही "अंधा कुआ" की नायिका पतिके अत्याचारोंके कारण कुएँमें गिर तो जाती है, लेकिन सूकाको जीवित बचाया जाता है।

लेकिन अंधे कुएँ रूपी भगौती के चंगुलसे बच निकलना सूकाके लिए असंभव है। सूका भगौतीको "अंधा कुआँ" इसलिए कहती है क्योंकि अंधे कुएँमें जिस तरह जल नहीं होता, ठीक उसी तरह भगौती बिना दयाके बेरहम है। संक्षेपमें ग्रामीण या लोक जीवनकी पृष्ठभूमिमें "अंधाकुआ" शीर्षक देकर लालने औचित्यका परिचय दिया है।

उपर्युक्त शीर्षक के संबंधमें "अंधाकुआमें" भी उल्लेख आया है। भगौतीकी पत्नी सूका इस संदर्भमें कहती है, "सूका--- इसलिए जब मैं मरने भी गई तो मुझे मेरे करममें अंधाकुआँ ही मिला। पर मैं समझती हूँ, वह कोई कुआँ न था, वह था गाँव का झूठ। अगर वह कुआँ सच अंधा होता, तो उसमें दो-चार जहरीले साँप जरूर होते। उपरसे वह घास-फूस लता-बंवर से ढका होता और उसमें कोई मुझे गिरी हुई न देख पाता। मुझे खूब मालूम है, ऐसे कुएँमें एकबार गिरकर आज तक कोई जिंदा बाहर नहीं निकला है ---- लेकिन मैं निकली हूँ।" [१]

---

(१) अंधाकुआँ --- लक्ष्मीनारायण लाल ---- पृ. १२८, १२९

इससे स्पष्ट है कि "अंधा कुआं" याने कोई सचमुच कुआं यह अर्थ बिलकुल अभिप्रेत नहीं है। बल्कि उसके आगे स्वयं सूकाने इस संदर्भमें कहा है, " अंधा कुआं यही है जिसके संग मैं ब्याही गयी हूं, जिसमें एक बार मैं गिरी, और ऐसी गिरी कि फिर न उबरी। न कोई मुझे निकाल पाया, न मैं खुद निकल सकी और न कभी निकल पाऊंगी। बस, धीरे-धीरे- इसीमें घुककर मर जाऊंगी। " [१]

इस तरह सूकाके उपर्युक्त उद्गार तीन दृष्टियोंसे महत्त्वपूर्ण है।

(१) उपर्युक्त उदगार नाटकके शीर्षकके संदर्भमें प्रकाश डालते है।

(२) इन उद्गारोंने नाटकके अंतके बारेमें संकेत किया है।

(३) अंधा कुआंमें जैसे कल्पना की जाती है कि इसमें पडनेवाला जीवित नहीं बचल सकना--- इस अर्थमें सूकाने अपने पतिके खातीर अपनी जान दे दी।

समग्र रीतिसे उपर्युक्त शीर्षक अधिक सार्थक लगता है।

. . . . .

---

(१) अंधा कुआं ----लक्ष्मीनारायण लाल -- पृ. १६९.